"मंथन के मोती"

सुलेखा राष्ट्रीय समिति द्वारा तृतीय प्रतयोगिता "लिखो कहानी" का आयोजन दिनांक 23.06.2017 व समापन दिनांक 20.08.2017 रात्रि 12:00 बजे हुआ। 25 अंचलों से 75 कहानियाँ आई।

आज के प्रगतिशील समाज का सबसे अहम विषय सास–बहू–बेटी। इस युग में बहू को बेटी कहकर सम्बोधित करना क्या स्वयं को छलावा देने जैसा है? इसी तथ्य पर दिये पैराग्राफ के आधार पर विचार करने के लिये ये प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। बहुत ही संवेदनशील विषय है यह। शाश्वत् चलता सास–बहू द्वन्द। कारण–"अहंकार"। इंसानी बाड़ो से लेकर समाज और क्षेत्र भर में हर तरफ ऐसे लोगों की बहुत बड़ी संख्या है जो अपने इर्द–गिर्द अहंकारी आभामण्डल हमेशा बनाए रखते है और दिन–रात उसी में रमण करते हुए आसमान की ऊँचाईयों में होने का भ्रम पाले रहते है।

सास–बहू में ठन गई, लड़ते बीती रात।
बढ़ते–बढ़ते बढ़ गई, एक जरा सी बात।।
"खटोला यही बिछेगा"।।

दरअसल हम सभी जानते है कि घर में रहने वाले सभी के मत एक समान नहीं होते और इसी बात को इन कहानियों में भी विभिन्न तरीके से रखा। कुछ कहानियों में बहू के अपशब्द पर सास के हृदय की वेदना को सहज भाव से उकेरा गया। कई लेखिकाओं ने खुले मन से स्वीकारा कि बहू–बेटी जैसी हो सकती है पर बेटी नहीं। कुछ लोगों ने बहू को बेटी माना पर उसके दुर्व्यवहार पर

सास पर क्या बीती इसको बताने में लेखिका असमर्थ रही। कुछ एक ने सास को ढोंगी करार किया जो समाज में तो बहू को बेटी बताती फिरती है पर घर में व्यंग्य–बाण के तीर चलाने से नहीं चुकती। दो–एक कहानियों में बेटी और बहू में सामंजस्य बैठाकर विषय को आगे बढ़ाया और इस जटिल समस्या के कारण और निवारण का विश्लेषण किया जो अच्छा लगा। पर कुल मिलाकर अधिकांश लोगों के विचार थे कि बहू को बहू के सहज व स्वाभाविक रूप में ही स्वीकारा जाना चाहिये।

एक महत्वपूर्ण बात पर समिति सभी समाज जनों का ध्यान आकर्षित करना चाहती है कि इस इंटरनेट, वाट्सएप व फेसबुक के युग में हम कहानी लिखना, पढ़ना या सुनना भूल गए है क्योंकि अधिकांश कहानी की शुरूआत तो कहानी रूप में की गई पर मध्य में ही या अन्त तक आते–आते कहानी न रहकर वह लेख या विचार में परिवर्तित हो रही थी। कहानी का कथानक के विस्तार के लिये जिस कल्पनाशीलता की आवश्यकता होती है कई प्रस्तुतियों में उसका नितांत अभाव था।

नियम का उल्लंघन करने पर कई प्रविष्टियाँ निरस्त कर दी गई। किसी ने शीर्षक ना लिखने की भूल की तो किसी ने शब्द–सीमा के नियम का पालन नहीं किया। किसी ने दिये पैराग्राफ को नजरअंदाज किया तो कोई अपने विषय से भटक गया। बहुत बार कहने के बाद भी कई कहानियाँ सही तरीके से टाइप नहीं की गई थी।

साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा प्रविष्टियों का आंकलन एवं पुरस्कार हेतु चयन किया जाता है अतः सभी लेखिकाओं से सुलेखा समिति का निवेदन है कि आप सभी धीरे–धीरे ही सही पर सफलता और आत्मविश्वास की सीढ़ियाँ चढ़ रहे हैं कृपया प्रस्तुतियों में व्याकरण की त्रुटियों पर एवं , । ? आदि पर विशेष ध्यान दीजिए। हिन्दी के प्रचार–प्रसार और चिन्तन मनन की दिशा में कदम दर कदम बढ़ाते हुए सुलेखा समिति के साथ चलिये।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों के निर्देशन और मार्गदर्शन में सुलेखा प्रभारी और संयोजिका मण्डल के आपसी सहयोग से यह प्रतियोगिता सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। प्रदेश पदाधिकारियों और प्रतिभागियों का सहयोग भी विशिष्ट स्थान रखता है। भविष्य में भी आप सभी का सहयोग, आपका प्रयास समाज को अनन्त ऊँचाईयों पर पहुँचाने में सक्षम होगा।

धन्यवाद!

(सीमा झँवर)
राष्ट्रीय सुलेखा संयोजिका,
कानपुर नगर।